मंडे पॉजिटिव हेरिटेज ट्रेन से जुड़कर बना रहे पर्यटनस्थल, जहां गांव वाले पर्यटकों को सभी सुविधा देंगे, बोट चलाएंगे, भोजन की व्यवस्था करेंगे

8 साल में 115 स्टॉपडैम बना चोरल नदी को किया जिंदा; आईआईटी की रिसर्च-ग्रामीण दो से ज्यादा फसल ले रहे, 28 गांवों की 70 % आबादी का पलायन रुका

- भरपूर पानी होने से किनारों के गांवों में सब्जियों की पैदावार बढ़ी

भास्कर संवाददाता | इंदौर

जिले में बहने वाली चोरल और सूकड़ी नदी में सालभर पानी बनाए रखने के लिए करीब आठ साल पहले शुरू हुआ पुनर्जीवन प्रोजेक्ट लगभग पूरा हो गया है। इस प्रोजेक्ट के तहत नदी के किनारे बसे 28 गांवों के हजारों लोगों ने एनजीओ नागरथ ट्रस्ट व प्रशासन की मदद से नदी में जगह-जगह 115 से ज्यादा स्टॉपडैम व चोक डैम बनाए। बोल्डर स्ट्रक्चर व अन्य काम करते हुए नदी का पानी रोका। इसके चलते अब नदी में सालभर पानी रहता है। आईआईटी इंदौर में नदी पर रिसर्च कर रहे विनोद कुमार ने इस पूरे प्रोजेक्ट की फील्ड स्टडी की, जिसमें पाया कि नदी के पुनर्जीवन के कारण अब किसान सालभर में दो से ज्यादा फसलें लेने लगे हैं। एक-एक किसान साल में तीन लाख रुपए से ज्यादा की तो सब्जियां उगा लेता है और सबसे महत्वपूर्ण यह कि इससे गांव से शहर जाने वाले लोगों का पलायन 70 फीसदी कम हो गया है। अब लोग यहीं पर खेती कर रहे हैं।

ऐसे दिया नया जीवन...पानी रोकने के लिए एक-एक मीटर के गड्ढे खोदे, 10 हजार से ज्यादा बोल्डर स्ट्रक्चर बनाए

ग्रामीणों की मेहनत

अब बदली तस्वीर

तत्कालीन कलेक्टर राघवेंद्र सिंह के साथ ट्रस्ट, जिला पंचायत ने मिलकर इस प्रोजेक्ट पर काम किया। पहाड़ी एरिया होने से बारिश में मिट्टी कटकर नदी में मिलती थी और पानी कम जाता था, इसलिए मिट्टी को कटने से रोकने के लिए सूकड़ी और चोरल दोनों नदियों के किनारे की पहाड़ी पर एक लाख से ज्यादा ट्रेंच (पहाड़ी पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर एक-एक मीटर के गढ्ढे, जिसमें पहाड़ी से आने वाली मिट्टी रुक जाती है और पानी धीर-धीरे नदी में जाता है) स्ट्रक्चर बनाए। 10 हजार से ज्यादा बोल्डर (बड़ी गिट्टी) स्ट्रक्चर नदी के किनारे बनाए, जिससे पानी को थोड़ी-थोड़ी दूरी पर सहेजा जा सके। जहां पानी का बहाव अधिक आता है, गांव की आबादी अधिक है और जल संग्रहण अधिक किया जा सकता है, वहां पर स्टॉपडैम बनाए गए।

सहयोग... 10 करोड़ से ज्यादा अनुदान जुटाया

सुरेश एमजी ने बताया विविध योजनाओं के तहत मिले दस करोड़ रुपए से अधिक अनुदान का इसमें उपयोग किया गया। इसमें दो करोड़ रुपए मजदूरी में दिए गए और आठ साल तक लगातार ग्रामीणों ने खुलकर श्रमदान किया। इसके बाद यह प्रोजेक्ट पूरा हो सका है। ग्रामीणों की सतत मेहनत का ही परिणाम है कि अब सालभर भरपूर पानी मिल पा रहा है।

अगला चरण... हर बड़े स्टॉपडैम पर विकसित कर रहे पर्यटनस्थल, रोजगार भी बढ़ेगा

एनजीओ नागरथ ट्रस्ट के टीम लीडर सुरेश एमजी ने बताया अगले चरण में रोजगार पर विशेष तौर पर काम किया जा रहा है। हेरिटेज ट्रेन चलने के बाद अब नदी में जगह-जगह बने बड़े स्टॉपडैम जहां पानी अधिक रहता है, वहां पर पर्यटन स्थल विकसित किए जा रहे हैं, जहां पर गांव वाले पर्यटकों को सभी सुविधा देंगे, बोट चलाएंगे, भोजन की भी व्यवस्था करेंगे। इससे स्थानीय रोजगार बढ़ेगा।

Dainik Bhaskar (Indore), 21st January 2019, Page-2